SET-1

Series RLH/2

कोड नं.
Code No. **3/2/1**

रोल नं.
Roll No.

परीक्षार्थी कोड को उत्तर-पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर अवश्य लिखें ।

- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में मुद्रित पृष्ठ **15** हैं ।
- प्रश्न-पत्र में दाहिने हाथ की ओर दिए गए कोड नम्बर को छात्र उत्तर-पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर लिखें ।
- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में **16** प्रश्न हैं ।
- **कृपया प्रश्न का उत्तर लिखना शुरू करने से पहले, प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें ।**
- इस प्रश्न-पत्र को पढ़ने के लिए 15 मिनट का समय दिया गया है । प्रश्न-पत्र का वितरण पूर्वाह्न में 10.15 बजे किया जाएगा । 10.15 बजे से 10.30 बजे तक छात्र केवल प्रश्न-पत्र को पढ़ेंगे और इस अवधि के दौरान वे उत्तर-पुस्तिका पर कोई उत्तर नहीं लिखेंगे ।

संकलित परीक्षा – II
SUMMATIVE ASSESSMENT – II

हिन्दी
HINDI

(पाठ्यक्रम अ)
(Course A)

निर्धारित समय : 3 घण्टे | *अधिकतम अंक : 90*

Time allowed : 3 hours | *Maximum Marks : 90*

निर्देश : *(i)* *इस प्रश्न-पत्र के **चार** खण्ड हैं – क, ख, ग और घ ।*

(ii) *चारों खण्डों के प्रश्नों के उत्तर देना **अनिवार्य** है ।*

(iii) *यथासंभव प्रत्येक खण्ड के उत्तर क्रमशः दीजिए ।*

खण्ड क

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए : *1×5=5*

अकाल के बीच भी अच्छे काम और अच्छे विचार का एक सुंदर छोटा सा उदाहरण राजस्थान के अलवर क्षेत्र का है जहाँ तरुण भारत संघ पिछले बीस बरस से काम कर रहा है । वहाँ पहले अच्छा विचार आया तालाबों का, हर नदी, नाले को छोटे-छोटे बाँधों से बाँधने का । इस तरह वहाँ और आसपास के कुछ और ज़िलों के कोई 600 गाँवों ने बरसों तक वर्षा की एक-एक बूँद को सहेज लेने का काम चुपचाप किया । इन तालाबों, बाँधों ने वहाँ सूखी पड़ी पाँच नदियों को 'सदानीरा' का नाम वापस दिलाया ।

अच्छे विचारों से अच्छा काम हुआ और फिर आई चुनौती भरे अकाल की पहली सूचना । नदियों में, तालाबों में, कुओं में वहाँ तब भी पानी लबालब भरा था । फिर भी इस क्षेत्र के लोगों ने, किसानों ने आज से सात-आठ माह पहले यह निर्णय किया कि पानी कम गिरा है इसलिए ऐसी फ़सलें नहीं बोनी चाहिए जिनकी प्यास ज़्यादा होती है । तो कम पानी लेने वाली फ़सलें लगाई गईं । इसमें उन्हें कुछ आर्थिक नुकसान उठाना पड़ा पर आज यह क्षेत्र अकाल के बीच में एक बड़े हरे द्वीप की तरह खड़ा है । यहाँ संसार को न तो टैंकरों से पानी ढोना पड़ रहा है न अकाल राहत का पैसा बाँटना पड़ा है । लोग, गाँव किसी के आगे हाथ नहीं पसार रहे हैं । उनका माथा ऊँचा है । पानी के उम्दा काम ने उनके स्वाभिमान की भी रक्षा की है ।

अलवर में नदियाँ एक दूसरे से जोड़ी नहीं गई हैं । यहाँ के लोग अपनी नदियों से, अपने तालाबों से जुड़े हैं । यहाँ पैसा नहीं बहाया गया है, पसीना बहाया है, लोगों ने और अच्छे काम और अच्छे विचारों ने अकाल को एक दर्शक की तरह पाल के किनारे खड़ा कर दिया है ।

(क) लेखक अकाल के बीच किस अच्छे काम की चर्चा कर रहा है ?

- (i) तरुण भारत संघ द्वारा पिछले बीस वर्ष से काम करना
- (ii) तालाब, नदी, नाले की एक-एक बूँद को सहेजकर रखना
- (iii) अकाल से जुझने के लिए योजनाएँ बनाना
- (iv) सभी नदियों को परस्पर जोड़ना

(ख) 'सदानीरा' का तात्पर्य है

(i) पाँच नदियों का संगम

(ii) जहाँ सदा पानी की कमी हो

(iii) जो नदी कभी सूखती नहीं

(iv) जिससे मनुष्य सदा जल प्राप्त करता है

(ग) कम पानी वाली फ़सलें बोने का निर्णय क्यों लिया गया ?

(i) अकाल की पूर्व सूचना के कारण

(ii) तालाबों में पानी कम होने के कारण

(iii) पानी की बचत ज़रूरी होने के कारण

(iv) मौसम विभाग के अनुरोध के कारण

(घ) किसानों को ज़्यादा प्यासी फ़सलें न बोने से क्या लाभ हुआ ?

(i) आर्थिक नुकसान नहीं हुआ

(ii) उनका क्षेत्र अकाल में भी हरा-भरा रहा

(iii) आमदनी अधिक हुई

(iv) उनके गाँव का बहुत नाम हुआ

(ङ) अलवर के लोगों ने क्या कर दिखाया ?

(i) अपने कार्य से सबका मन मोह लिया

(ii) गाँधीजी द्वारा दिखाए गए मार्ग पर चलकर दिखाया

(iii) सबको नया जीवन दिया

(iv) अकाल को एक दर्शक की तरह खड़ा कर दिया

2. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए : *1×5=5*

आज की नारी संचार प्रौद्योगिकी, सेना, वायुसेना, चिकित्सा, इंजीनियरिंग, विज्ञान वगैरह के क्षेत्र में न जाने किन-किन भूमिकाओं में कामयाबी के शिखर छू रही है । ऐसा कोई क्षेत्र नहीं, जहाँ आज की महिलाओं ने अपनी छाप न छोड़ी हो । कह सकते हैं कि आधी नहीं, पूरी दुनिया उनकी है । सारा आकाश हमारा है । पर क्या सही मायनों में इस आज़ादी की आँच हमारे सुदूर गाँवों, कस्बों या दूरदराज के छोटे-छोटे कस्बों में भी उतनी ही धमक से पहुँच पा रही है ? क्या एक आज़ाद, स्वायत्त मनुष्य की तरह अपना फ़ैसला ख़ुद लेकर मज़बूती से आगे बढ़ने की हिम्मत है उसमें ?

बेशक समाज बदल रहा है मगर यथार्थ की परतें कितनी बहुआयामी और जटिल हैं जिन्हें भेदकर अंदरूनी सच्चाई तक पहुँच पाना आसान नहीं । आज के इस रंगीन समय में नई बढ़ती चुनौतियों से टकराती स्त्री की क्रांतिकारी आवाजें हम सबको सुनाई दे रही हैं मगर यही कमाऊ स्त्री जब समान अधिकार और परिवार में लोकतंत्र की अनिवार्यता पर बहस करती या सही मायनों में लोकतंत्र लाना चाहती है तो वहाँ इसकी राह में तमाम धर्म, भारतीय संस्कृति, समर्पण, सहनशीलता, नैतिकता जैसे सामंती मूल्यों की पगबाधाएँ खड़ी की जाती हैं ।

नारी की सच्ची स्वाधीनता का अहसास तभी हो पाएगा जब वह आज़ाद मनुष्य की तरह भीतरी आज़ादी को महसूस करने की स्थितियों में होगी ।

(क) पूरी दुनिया और सारा आकाश औरतों का है, कैसे ?

(i) औरतें हवाई जहाज़ उड़ा सकती हैं ।

(ii) प्रत्येक क्षेत्र में कामयाबी का सेहरा उनके सिर पर है ।

(iii) महिलाओं की कामयाबी को कोई नकार नहीं सकता ।

(iv) आज की नारी शिक्षित है ।

(ख) लेखिका को ऐसा क्यों लगता है कि आज़ादी की गर्माहट सुदूर गाँवों तक नहीं पहुँची है ?

(i) महिलाएँ एक स्वतंत्र मनुष्य की तरह अपना निर्णय ले सकती हैं ।

(ii) स्त्री आज़ाद पुरुष की तरह अपनी राह पर बढ़ने की हिम्मत नहीं रखती है ।

(iii) आज़ादी का फल गाँवों तक पहुँचना कठिन है ।

(iv) ग्रामीण नारी के लिए उत्थान योजनाएँ नहीं बनाई गई हैं ।

(ग) शिक्षित महिला भी समान अधिकार की बात तो करती है लेकिन अपने परिवार के आगे घुटने टेक देती है, क्यों ?

(i) वह बेहद कमज़ोर है ।

(ii) परिवार की आवश्यकता को वह समझती है ।

(iii) परिवार में लोकतंत्र की अनिवार्यता पर बहस करना चाहती है ।

(iv) परिवार की स्थिरता के लिए समर्पण भाव अपनाना पड़ता है ।

(घ) नारी की वास्तविक आज़ादी कब होगी ?

(i) जब वह स्वयं भीतरी स्वतंत्रता का अहसास कर पाएगी ।

(ii) जब पूरा समाज उसे आज़ादी देगा ।

(iii) जब वह चुनौतियों को स्वीकार करेगी ।

(iv) जब वह भारतीय संस्कृति के मूल्यों का पूरी तरह वहन करेगी ।

(ङ) प्रस्तुत गद्यांश का उचित शीर्षक हो सकता है

(i) नारी की आज़ादी

(ii) आज की महिला

(iii) कामयाब नारी

(iv) सशक्त नारी

3. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए : *1×5=5*

सबको स्वतंत्र कर दे यह संगठन हमारा ।
छूटे स्वदेश ही की सेवा में तन हमारा ।।

जब तक रहे फड़कती नस एक भी बदन में ।
हो रक्त बूँद भर भी जब तक हमारे तन में ।।
छीने न कोई हमसे प्यारा वतन हमारा ।
छूटे स्वदेश ही की सेवा में तन हमारा ।।

कोई दलित न जग में हमको पड़े दिखाई ।
स्वाधीन हों सुखी हों सारे अछूत भाई ।।
सबको गले लगा ले यह शुद्ध मन हमारा ।
छूटे स्वदेश ही की सेवा में तन हमारा ।।

धुन एक ध्यान में है, विश्वास है विजय में ।
हम तो अचल रहेंगे तूफ़ान में प्रलय में ।।
कैसे उजाड़ देगा कोई चमन हमारा ?
छूटे स्वदेश ही की सेवा में तन हमारा ।।

हम प्राण होम देंगे, हँसते हुए जलेंगे ।
हर एक साँस पर हम आगे बढ़े चलेंगे ।।
जब तक पहुँच न लेंगे तब तक न साँस लेंगे ।
वह लक्ष्य सामने है पीछे नहीं टलेंगे ।।
गायें सुयश खुशी से जग में सुजन हमारा ।
छूटे स्वदेश ही की सेवा में तन हमारा ।।

(क) कवि की हार्दिक इच्छा है

(i) मरते दम तक देश की सेवा करता रहे ।

(ii) अपने ही देश में उसके प्राण छूटें ।

(iii) उसका देश स्वतंत्र हो ।

(iv) देश में सभी शिक्षित हों ।

(ख) कवि किस तरह के समाज की कल्पना करता है ?

(i) सबके मन और विचार शुद्ध हों ।

(ii) सभी स्वाधीन हों ।

(iii) समाज में कोई भी दलित और अछूत न हो ।

(iv) कोई भी हमारे वतन को छीन न सके ।

(ग) कवि को क्या विश्वास है ?

(i) पूरा संसार उसके मन के अनुसार चलेगा ।

(ii) वह अपना कार्य पूरा कर पाएगा ।

(iii) कोई भी हमारे देश को नहीं उजाड़ सकता ।

(iv) तूफ़ान भी हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता ।

(घ) बलिदान की भावना किस पंक्ति में अभिव्यक्त हुई है ?

(i) हर एक साँस पर हम आगे बढ़े चलेंगे ।

(ii) हम प्राण होम देंगे, हँसते हुए जलेंगे ।

(iii) सबको गले लगा ले यह शुद्ध मन हमारा ।

(iv) जब तक पहुँच न लेंगे तब तक न साँस लेंगे ।

(ङ) 'हम तो अचल रहेंगे तूफ़ान में प्रलय में' – तूफ़ान और प्रलय से तात्पर्य है

(i) क्रांतियाँ

(ii) चुनौतियाँ

(iii) रुकावटें

(iv) विश्वास

4. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए : *1×5=5*

तेरे-मेरे बीच कहीं है एक घृणामय भाईचारा ।
संबंधों के महासमर में तू भी हारा मैं भी हारा ।।

बँटवारे ने भीतर-भीतर
ऐसी-ऐसी डाह जगाई ।
जैसे सरसों के खेतों में
सत्यानाशी उग-उग आई ।।

तेरे-मेरे बीच कहीं है टूटा-अनटूटा पतियारा ।
संबंधों के महासमर में तू भी हारा मैं भी हारा ।।

अपशब्दों की बंदनवारें
अपने घर हम कैसे जाएँ ।
जैसे साँपों के जंगल में
पंछी कैसे नीड़ बनाएँ ।।

तेरे-मेरे बीच कहीं है भूला-अनभूला गलियारा ।
संबंधों के महासमर में तू भी हारा मैं भी हारा ।।

बचपन की स्नेहिल तसवीरें
देखें तो आँखें दुखती हैं ।
जैसे अधमुरझी कोंपल से
ढलती रात ओस झरती है ।।

तेरे-मेरे बीच कहीं है बूझा-अनबूझा उजियारा ।
संबंधों के महासमर में तू भी हारा मैं भी हारा ।।

(क) कविता से किस बँटवारे की बात हो सकती है ?

(i) दो भाइयों का बँटवारा

(ii) दो देशों के बीच का बँटवारा

(iii) संपत्ति का बँटवारा

(iv) दो शरणार्थियों के बीच का बँटवारा

(ख) 'तेरे-मेरे बीच कहीं है एक घृणामय भाईचारा' का भाव है

(i) परस्पर संबंधों में इतनी घृणा हो गई कि भाईचारा कहाँ रह गया ।

(ii) जब परस्पर संबंधों में दरार आ जाती है तो भाईचारे का प्रश्न ही नहीं उठता ।

(iii) परस्पर संबंधों के बीच घृणा के बीज बोए गए फिर भी भाईचारा बना रहा ।

(iv) बँटवारे में घृणा के सिवाय और कुछ नहीं ।

(ग) 'सरसों के खेतों में सत्यानाशी' किसे कहा गया है ?

(i) काम बिगाड़ने वाले लोगों को

(ii) दीमक को

(iii) लोगों को

(iv) परस्पर ईर्ष्याभाव को

(घ) 'अपशब्दों की बंदनवारें' कैसे प्रभावित करती हैं ?

(i) मनुष्य को परेशान करती हैं ।

(ii) अपनों से मिलने से रोकती हैं ।

(iii) सजावट के काम आती हैं ।

(iv) मेल-मिलाप की गुंजायश नहीं रह जाती ।

(ङ) बचपन की तसवीरें क्या आशा जगाती हैं ?

(i) आँसुओं में मलिनता धुल जाएगी और उजाला होगा ।

(ii) यौवन ठीक-ठाक गुजरेगा ।

(iii) घर के बुजुर्ग शांति स्थापित कर पाएँगे ।

(iv) बीता हुआ बचपन लौट आएगा ।

खण्ड ख

5. निर्देशानुसार कीजिए : *1×3=3*

(क) इसका क्या सबूत कि उस ज़माने में बोलचाल की भाषा प्राकृत न थी ? (रचना के आधार पर वाक्य-भेद लिखिए)

(ख) दोपहर हो गई और कोई बच्चा खेलने नहीं निकला । (मिश्र वाक्य में बदलिए)

(ग) रमा शहर जाकर बीमार हो गई । (संयुक्त वाक्य में बदलिए)

6. निर्देशानुसार वाच्य परिवर्तित कीजिए : *1×4=4*

(क) बहन ने भाई को प्रेमपूर्वक राखी बाँधी । (कर्मवाच्य में)

(ख) महादेवी वर्मा द्वारा यामा लिखी गई । (कर्तृवाच्य में)

(ग) वह खड़ा नहीं हो सकता । (भाववाच्य में)

(घ) माँ से रातभर नहीं बैठा जाएगा । (कर्तृवाच्य में)

7. निम्नलिखित रेखांकित पदों का पद-परिचय दीचिए : *1×4=4*

<u>सुंदर</u> गृहिणी की तो <u>मुझे</u> याद नहीं <u>लेकिन</u> उनके बेटे और पतोहू को तो मैंने <u>देखा था</u> ।

8. (क) निम्नलिखित काव्यांश पढ़कर रस पहचान कर लिखिए : *1×3=3*

(i) पड़ी थी बिजली-सी विकराल, लपेटे थे घन जैसे बाल ।
कौन छेड़े ये काले साँप, अवनिपति उठे अचानक काँप ।

(ii) कहीं लाश बिखरी गलियों में
कहीं चील बैठी लाशों में ।

(iii) उस काल मारे क्रोध के तनु काँपने उनका लगा ।
मानो हवा के जोर से सोता हुआ सागर जगा ।

(ख) निम्नलिखित काव्यांश में कौन-सा स्थायी भाव है ? *1*

वह मधुर यमुना कि जिसमें,
स्निग्ध दृग का जल बहा है ।
वह मधुर ब्रजभूमि जिसको,
कृष्ण के उर ने वरा है ।

खण्ड ग

9. निम्नलिखित गद्यांश के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

अपनी ज़िंदगी ख़ुद जीने के इस आधुनिक दबाव ने महानगरों के फ़्लैट में रहने वालों को हमारे इस परंपरागत 'पड़ोस-कल्चर' से विच्छिन्न करके हमें कितना संकुचित, असहाय और असुरक्षित बना दिया है । मेरी कम-से-कम एक दर्जन आरंभिक कहानियों के पात्र इसी मोहल्ले के हैं जहाँ मैंने अपनी किशोरावस्था गुज़ार अपनी युवावस्था का आरंभ किया था । एक-दो को छोड़कर उनमें से कोई भी पात्र मेरे परिवार का नहीं है । बस इनको देखते-सुनते, इनके बीच ही मैं बड़ी हुई थी लेकिन इनकी छाप मेरे मन पर इतनी गहरी थी, इस बात का अहसास तो मुझे कहानियाँ लिखते समय हुआ । इतने वर्षों के अंतराल ने भी उनकी भाव-भंगिमा, भाषा, किसी को भी धुँधला नहीं किया था और बिना किसी विशेष प्रयास के बड़े सहज भाव से वे उतरते चले गए थे ।

(क) परंपरागत पड़ोस कल्चर की कोई एक अच्छाई और कोई एक बुराई लिखिए । *2*

(ख) मन्नू भंडारी अपने मोहल्ले से कैसे प्रभावित हुईं ? *2*

(ग) 'बिना किसी विशेष प्रयास के बड़े सहज भाव से वे उतरते चले गए थे ।' इस पंक्ति का संदर्भ स्पष्ट कीजिए । *1*

अथवा

और सभ्यता ? सभ्यता है संस्कृति का परिणाम । हमारे खाने-पीने के तरीके, हमारे ओढ़ने-पहनने के तरीके, हमारे गमना-गमन के साधन, हमारे परस्पर कट-मरने के तरीके; सब हमारी सभ्यता हैं । मानव की जो योग्यता उससे आत्म-विनाश के साधनों का आविष्कार कराती है, हम उसे उसकी संस्कृति कहें या असंस्कृति ? और जिन साधनों के बल पर वह दिन-रात आत्म-विनाश में जुटा हुआ है, उन्हें हम उसकी सभ्यता समझें या असभ्यता ? संस्कृति का यदि कल्याण की भावना से नाता टूट जाएगा तो वह असंस्कृति होकर ही रहेगी और ऐसी संस्कृति का अवश्यंभावी परिणाम असभ्यता के अतिरिक्त दूसरा क्या होगा ?

(क) सभ्यता को संस्कृति का परिणाम क्यों कहा गया है ? *2*

(ख) आत्म-विनाश के साधनों का आविष्कार कराने की मानव की योग्यता को हम उसकी संस्कृति कहें या असंस्कृति और क्यों ? *2*

(ग) कल्याण-भाव से रहित संस्कृति का क्या परिणाम होगा ? *1*

10. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए : *2×5=10*

(क) महावीर प्रसाद द्विवेदी किस परिस्थिति में प्रसिद्ध अख़बार के संपादक को भी अपढ़ मानता है और क्यों ?

(ख) कुछ पुरातनपंथी लोग स्त्रियों की शिक्षा के विरोधी थे । द्विवेदी जी ने क्या-क्या तर्क देकर स्त्री-शिक्षा का समर्थन किया ? दो का उल्लेख कीजिए ।

(ग) सिद्ध कीजिए कि वर्तमान में लड़कियाँ क्षमता में लड़कों से पीछे नहीं हैं ।

(घ) कैसे कहा जा सकता है कि बिस्मिल्ला खाँ साहब सच्चे अर्थों में भारत-रत्न थे ?

(ङ) एक संगीतज्ञ के रूप में खाँ साहब का जीवन हमें विद्यार्थी जीवन के लिए किन मूल्यों की शिक्षा देता है ?

11. निम्नलिखित काव्यांश के आधार पर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

बिहसि लखनु बोले मृदु बानी । अहो मुनीसु महाभट मानी ।।
पुनि पुनि मोहि देखाव कुठारु । चहत उड़ावन फूँकि पहारू ।।
इहाँ कुम्हड़बतिया कोउ नाहीं । जे तरजनी देखि मरि जाहीं ।।

(क) लक्ष्मण ने परशुराम पर क्या व्यंग्य किया ? *2*

(ख) 'चहत उड़ावन फूँकि पहारू' से लक्ष्मण का क्या अभिप्राय है ? *2*

(ग) 'कुम्हड़बतिया कोउ नाहीं' का अभिप्राय स्पष्ट कीजिए । *1*

अथवा

मुख्य गायक के चट्टान जैसे भारी स्वर का साथ देती
वह आवाज़ सुंदर कमज़ोर काँपती हुई थी
वह मुख्य गायक का छोटा भाई है
या उसका शिष्य
या पैदल चलकर सीखने आने वाला दूर का कोई रिश्तेदार
मुख्य गायक की गरज़ में
वह अपनी गूँज मिलाता आया है प्राचीन काल से

(क) उपर्युक्त पंक्तियों में किस प्राचीन परंपरा की ओर संकेत किया गया है ? वर्तमान में यह परंपरा किस रूप में मिलती है ? *2*

(ख) किसी भी क्षेत्र में मुख्य व्यक्ति की भूमिका कब सार्थक होती है और क्यों ? *2*

(ग) मुख्य गायक का साथ देने वाला कौन हो सकता है ? *1*

12. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए : *2×5=10*

(क) मनुष्य अतीत में खोए रहने के कारण दुखी रहता है । आपके विचार में दुख के और क्या कारण हो सकते हैं ?

(ख) 'मृगतृष्णा' से क्या तात्पर्य है ? उसके पीछे क्यों नहीं भागना चाहिए ?

(ग) 'लड़की होना पर लड़की जैसी दिखाई मत देना' का क्या भाव है ?

(घ) लड़की अभी सयानी नहीं थी, कवि ने इस संदर्भ में क्या-क्या कहा है ?

(ङ) 'कन्यादान' कविता में माँ ने वस्त्र और आभूषणों को शाब्दिक भ्रम और बंधन क्यों कहा है ?

13. आप किसी पर्वतीय स्थल पर घूमने गए थे । व्यावसायिक गतिविधियों से प्रभावित जीवन मूल्यों वाले उस क्षेत्र के दर्द को एक लेख के रूप में लिखिए । *5*

खण्ड घ

14. निम्नलिखित में से किसी ***एक*** विषय पर दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर 250 शब्दों में निबंध लिखिए : *10*

(क) विज्ञान और मानव

- आज का वैज्ञानिक युग
- विज्ञान से लाभ और हानियाँ
- उपसंहार

(ख) स्वच्छता अभियान

- स्वच्छता अभियान की आवश्यकता
- वर्तमान स्थिति
- वर्तमान स्थिति में सुधार

(ग) महानगरीय जीवन

- महानगरीय जीवन की आपा-धापी
- अभिशाप
- वरदान

15. नीचे दिए गए समाचार को पढ़िए । इसको पढ़कर जो विचार आपके मन में आते हैं, उन्हें किसी समाचार-पत्र के संपादक को पत्र के रूप में अपने शब्दों में लिखिए : *5*

ईमानदारी की मिसाल

बीते शुक्रवार को बाईस वर्षीय शेख लतीफ़ अली अपने खाते में मौजूद कुल पाँच सौ में से दो सौ रुपए निकालने स्टेट बैंक ऑफ हैदराबाद के एक ए.टी.एम. पर गया । पैसे निकालने के क्रम में मशीन के किनारे का एक दरवाजा खुल गया और उसमें से सारे नोट बाहर गिर गए । वहाँ न कोई सुरक्षा-गार्ड तैनात था न ही सी.सी.टी.वी. कैमरा लगा था । यानी चुपचाप सुरक्षित तरीके से ढेर सारी रकम ले जाने के लिए लतीफ़ के सामने पूरा मौका था । लेकिन उसके भीतर पल भर के लिए भी ऐसा खयाल नहीं आया और उसने बाहर खड़े अपने साथियों से सुरक्षा गार्ड को खोजने के लिए कहा । गार्ड के न मिलने पर पुलिस को फोन करके सारी स्थिति बताई ।

16. निम्नलिखित गद्यांश का शीर्षक लिखकर एक-तिहाई शब्दों में सार लिखिए : *5*

मैं यह नहीं मानता कि समृद्धि और अध्यात्म एक-दूसरे के विरोधी हैं या भौतिक वस्तुओं की इच्छा रखना कोई ग़लत सोच है । उदाहरण के तौर पर, मैं ख़ुद न्यूनतम वस्तुओं का भोग करते हुए जीवन बिता रहा हूँ, लेकिन मैं सर्वत्र समृद्धि की कद्र करता हूँ, क्योंकि समृद्धि अपने साथ सुरक्षा तथा विश्वास लाती है, जो अंततः हमारी आज़ादी को बनाए रखने में सहायक है । आप अपने आस-पास देखेंगे तो पाएँगे कि ख़ुद प्रकृति भी कोई काम आधे-अधूरे मन से नहीं करती । किसी बगीचे में जाइए । मौसम में आपको फूलों की बहार देखने को मिलेगी । अथवा ऊपर की तरफ़ ही देखें, यह ब्रह्मांड आपको अनंत तक फैला दिखाई देगा, आपके यकीन से भी परे ।

जो कुछ भी हम इस संसार में देखते हैं वह ऊर्जा का ही स्वरूप है । जैसा कि महर्षि अरविंद ने कहा है कि हम भी ऊर्जा के ही अंश हैं । इसलिए जब हमने यह जान लिया है कि आत्मा और पदार्थ दोनों ही अस्तित्व का हिस्सा हैं, वे एक-दूसरे से पूरा तादात्म्य रखे हुए हैं तो हमें यह एहसास भी होगा कि भौतिक पदार्थों की इच्छा रखना किसी भी दृष्टिकोण से शर्मनाक या ग़ैर-आध्यात्मिक बात नहीं है ।